हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

परिवर्तन लाने वाला शान्ति का आत्मा

एक विविध वैश्विक कलीसिया साथ मिलकर आराधना करते हुए। फोटो एन्ड्रयू सुडरमैन

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: सोमवार, 21 मई, 2018

एक हृदय के कक्षों के समान, एमडब्लयूसी के चार कमीशन ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के वैश्विक समुदाय की सेवा चार क्षेत्रों में करते हैं: डीकन, फेथ एण्ड लाइफ, पीस, मिशन। इन कमीशनों द्वारा जनरल कॉउंसिल के विचार विमर्श के लिए विषय तैयार किए जाते हैं, सदस्य कलीसियाओं को मार्गदर्शन और संसाधनों का प्रबन्ध किया जाता है, और सामान्य हितों और लक्ष्यों के मामलों में एमडब्लयूसी से सम्बन्धित नेटवर्कों (तंत्रों) या सहभागिताओं को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। निम्नलिखित लेख में अपनी सेवकाई के प्रकाश में एक संदेश प्रस्तुत किया है।

''यदि हम शान्ति की एक कलीसिया बनना चाहते हैं, तो हमें ऐसे लोगों की भी सहायता करना चाहिए और उनके सामने विकल्प रखना चाहिए जिन्हें नौकरी और आर्थिक स्थिरता की आवश्यकता है।'' यह बात गार्सिया पेड्रो डोमिन्गोस ने कही।

डोमिन्गोस अंगोला के निवासी हैं, उन्होंने यह टिप्पणी पीस कमीशन की सभाओं के दौरान दी। उन्होंने अपने अनुभवों को बताया कि किस तरह से उनका देश कुछ चुनौतियों का सामना कर रहा है और किस तरह से अब तक यह सेना के घने साए में जीने वाला एक समाज बना हुआ है, जिसका कारण लम्बे समय तक चला गृह युद्ध है जो 2002 में समाप्त हुआ। डोमिन्गोस कहते हैं कि लम्बे समय से कायम वास्तविकताओं में से एक यह है कि सेना एक ऐसे देश में सबसे स्थायी नियोक्ता है, जहाँ बेरोजगारी का आँकड़ा बहुत अधिक है।

कोलम्बियाई पृष्ठभूमि भी इससे प्रभावित है, यह बात पीस कमीशन (2009–2018) की सदस्य जेनी नेम ने कहा।

जब नेम ने कोलम्बिया और कोलम्बियाई मेनोनाइट कलीसिया के बारे में बताया, तो गार्सिया को यह सुन कर न सिर्फ आश्चर्य हुआ बल्कि राहत भी मिली कि किस तरह से दूसरे लोग भी इसी प्रकार की वास्तविकताओं का सामना कर रहे हैं, चाहे वे अलग अलग महाद्वीप के ही क्यों न हों।

दूरियों और भिन्नताओं के बाद भी, ऐसी चुनौतियों के बीच में एक सम्बन्ध है जो परमेश्वर की शान्ति के लिए कार्य करने के हमारे सयुंक्त प्रयास का विरोध करती हैं।

कुछ अवसरों पर, अपनी स्थानीय पृष्ठभूमि में, कलीसिया को लेकर हमारा दृष्टिकोण हमें अकेलापन महसूस करा सकता है। शायद हम दूसरों के संघर्षों के विषय में नहीं जानते; ये संघर्ष हमारे ही संघर्षों के समान हो सकते हैं।

हमारी कलीसियाई काफी एकरूप भी प्रतीत हो सकती हैं। हमें वह विविधता दिखाई नहीं देती जिसकी शायद हम चाहत करें। यह बात कुछ पृष्ठभूमियों में विशेष रूप से लागू होती है।

किन्तु, जब, हम सिर्फ अपने स्थानीय सन्दर्भ और अपनी कलीसिया की अभिव्यक्तियों को ही अपनी कलीसिया की एकमात्र बुनियाद मान लें, तो हम यह समझ पान में असफल हो जाते हैं कि किस प्रकार से संसार भर की अन्य कलीसियाएं इस बात की एक झलक प्रस्तुत करने का अवसर सामने लाती हैं कि एक साथ मिलकर हम क्या हैं – एक दूसरे की चुनौतियों और बोझों के साथ साथ वरदानों और भिन्नताओं को भी साझा करते हुए।

इसके अतिरिक्त, संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण के कारण हम उस बहुसांस्कृतिक खूबसूरती को पहचान पाने में असफल हो जाते हैं जो मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस के रूप में हमारी वैश्विक सहभागिता में एक वास्तविकता बन चुकी है। यह वृहद दृष्टिकोण हमें एक उत्साहजनक झलक दिखाता है कि हम स्थानीय मण्डलियों के लिए हमारी प्रबल प्रेरणा को साकार करते हुए इस बहुसांस्कृतिक पच्चीकारी को अपने स्वयं की पृष्ठभूमि में रूप दे सकें।

विविधता की यह पच्चीकारी एक सुन्दर और आशादायक वास्तविकता को सामने रखती है। यह एक ऐसी कलीसिया को दर्शाती है जो वास्तव में वैश्विक है। संसार भर से लोग, विभिन्न देशों, अलग अलग सामाजिक आर्थिक वास्तविकताओं, भिन्न भिन्न जातियों, आयुवर्गों और लिंगों का प्रतिनिधित्व करते हुए करते हुए एक परिवार के रूप में एक साथ आते हैं।

यह हमें अवसर प्रदान करती है कि हम एक दूसरे के साथ अपने जीवनों को साझा करें।

किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि तनाव, मतभेद, या चुनौतियाँ नदारद हैं। किसी भी परिवार के समान, असहमतियाँ रिश्तों की समृद्धि का एक हिस्सा है। किन्तु अवश्य ही, यह हमें अवसर देता है कि हम एक दूसरे से सीख सकें, कार्यों को करने के अलग अलग तरीकों का अनुभव हासिल कर सकें, और संसार भर की विभिन्न चुनौतियों से परिचित हो सकें।

विश्व के अन्य भाई बहनों की वास्तविकताओं के प्रति अपने दृष्टिकोण का विस्तार करने के द्वारा हम शान्ति की गवाही देने की चुनौतियों के विषय में सीखते हैं।

हमारा संसार आज भी हिंसा, लोभ, और स्वार्थ की आदत के प्रभावों को झेल रहा है जो हमें दूसरों के साथ, संसार के साथ, और परमेश्वर के साथ सहीं सम्बन्ध कायम रखने से दूर रखता है। और तौभी, जब हम आराधना करने के लिए, रिश्तों का निर्माण करने, और अपनी चुनौतियों को साझा करने के लिए साथ आते हैं, तो हम अपने जीवनों और संसार के प्रति हमारे दृष्टिकोणों को पवित्र आत्मा के सामने खोल कर रख देते हैं जो हमें इन अनुभवों के माध्यम से बदलता है।

ऐसे अनुभव निरन्तर हमारे सामने अवसर लाते हैं कि हम किस प्रकार से साथ चल सकते हैं, और अपने संसार में परमेश्वर की शान्ति की गवाही दे सकते हैं।

– मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस की एक विज्ञप्ति, पीस कमीशन के सचिव एन्ड्रयू सुडरमैन के द्वारा। वे इस्टर्न मेनोनाइट यूनिवर्सिटी, हेरिसनबर्ग, वर्जिनिया में धर्मविज्ञान, शान्ति, और मिशन के सहायक प्राध्यापक हैं।